सामाजिक विकास संस्थान चित्रकूट

एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन कार्यक्रम

प्रगति प्रतिवेदन

परियोजना का सारांश (Summary) . एकीकृत प्राकृतिक संसाधन परियोजना के अन्तर्गत सेमरिया व बन्दरकोल क्षेत्र का चयन किया गया । इसके पश्चात् पुनःक्षेत्र का भ्रमण प्रदान के श्री राकेश सिंह द्वारा किया गया। क्षेत्र भ्रमण के पश्चात् सेमरिया गॉव को कार्य के लिए चयनित किया गया। बन्दरकोल गाव में पहले से ही कार्य चल रहा था । किसानों से भी सम्पर्क किया गया। किसानों के साथ पूरे क्षेत्र का भ्रमण कर गॉव का नियोजन किया गया । प्राथमिकता के आधार गॉव के दलित, मुसलिम एवं गरीबी रेखा के नीचे निवास करने वाले किसानों का चयन इस कार्यक्रम के अन्तर्गत किया गया। किसानों के मनोबल को बढ़ाने एवं नयी जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से दूसरी संस्थाओं द्वारा किए गए कार्यों का भ्रमण कराने का निर्णय लिया गया। मेड़बन्दी एवं खेत तालाब जैसे कार्यो का भ्रमण करने के उपरान्त किसानों ने स्वतः मेड़बन्दी कार्य में सम्मिलित होने का निर्णय लिया । इस वर्ष वर्षा समय से हुई लेकिन मेड़बन्दी के मजबूत कार्य होने से वर्षा का सभी जल खेतों में रूका। किसान भी काफी प्रसन्न हुए। प्रयास भी यही था कि खेत का पानी खेत में रहे। कुछ किसानों का चयन एस0 आर0 आई0 विधि से धान की खेती करने के लिए किया गया। वे स्वतः प्रेरित थे। धान के बीज का शोधन एवं अकुंरण करने की विधि बतायी गयी। धान की जरई के लिए खेत में समय से बीज डाला गया। 12–15 दिन की जरई होने पर धान की रोपाई खेतों में एस0 आर0 आई0 विधि से कराई गयी। समय–समय पर खेत की निराई एवं गुड़ाई किसान करते रहे। इसी के साथ–साथ संस्था द्वारा सब्जी की नर्सरी तैयार कर किसानों को सीधे पौधे प्रदान किए गए। जिसमें भिण्डी , बैगन, पपीते , फूल, टमाटर इत्यादि के पौधे लगवाये गए। सब्जियों। । रवी फसल के दौरान किसानों का पुनः क्षमता वृद्वि कार्यक्रम चलाने के पश्चात् गेहूं, मटर , चना, सरसों का प्रदर्शन लगाया गया। सभी मे एस0 आर0 आई0 विधि का प्रयोग किया गया। सभी फसलों की बुआई के पूर्व बीज शोधन एवं अकुरन की प्रकिया का पालन किया गया। फसले अच्छी तैयार हुई। इस बीच प्रदान के अनुभवी अधिकारियों द्वारा भ्रमण कार्य भी हुआ। जो सुझाव दिए गए उसका पालन भी किया गया। फरवरी माह में लगातार वर्षा होने के कारण चना की फसल वर्वाद हो गयी। चने में दाने नही आए। इससे किसानों को काफी नुकसान हुआ। जो किसान मटर लगए थे उनको बहुत फायदा हुआ। बैगन , सेम टमाटर , मटर , लौकी , पालक से किसानों को नकद आय निरंतर कुछ न कुछ प्रतिदिन होती रही। खाने के लिए पोषक तत्व के रूप में हरी सब्जी भी परिवार को मिलती रही और विक्रय करके लाभ भी कमाए। रबी मे भी किसानों को सब्जियॉ लगवायी गयी इससे भी किसानों को लाभ मिला। संस्था के कार्यकर्ताओं के सतत प्रयास से किसानों की चेतना में भी परिवर्तन आया और संस्था के साथ मिलकर अच्छा कार्य करते रहे।

पूरे कायर्क्रम के संचालन के पश्चात ऐसा महसूस हुआ कि किसानो के आत्मविश्वास में वृद्वि हुई है और वे आगे भी इसी प्रकार मेहनत करके अच्छा लाभ कमा सकते हे। इस कार्यक्रम के सफल संचालन में जहॉ एक तरफ सामाजिक विकास संस्थान चित्रकूट के कार्यकर्ता लगे रहे वहीं गॉव के किसानों का भी सहयोग निरन्तर मिलता रहा । प्रदान संस्था झांसी के सभी अधिकारियों , तकनीकी स्टाफ, एवं कृषि वैज्ञानिकों का सहयोग नही मिलता तो यह कार्य संभव नही हो पाता। निश्चित ही प्रदान का सहयोग सराहनीय रहा है। टाटा ट्रस्ट ने इस पूरे कार्यक्रम के लिए यदि वित्तीय सहयोग नही उपलब्ध कराया होता तब यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित करना असंभव था।

2.परियोजना की पृष्ठभूमि (Background of the project**)** बुन्देलखण्ड की अन्य जनपदों की भॉति ही चित्रकूट जनपद भी पिछड़ा हुआ है क्योकि यहॉ की भौगोलिक परिरस्थातियॉ बहुत ही विषम है । यहॉ पर एक तरफ पहाड़ जंगल, नाले है तो दूसरी तरफ ऊबड़–खाबड़ भूमि एवं सिचाई के साधनों की भूमि के अभाव के कारण यहॉ कृषि में पैदावार कम है। सेमरिया व बन्दर कोल गॉव की लगभग 50 प्रतिशत भूमि ऊबड़ खाबड़ एवं ढलान युक्त है जहॉ पर पानी बिल्कुल नही ठहरता है। नालों से बह कर पानी नदी के तरफ चला जाता है। जिसका लाभ किसानों को नही मिलता हैं। गर्मी के दिनों में यहॉ के कुएं एवं हैण्डपंप सूख जाते है। पीने के लिए पानी की समस्या उत्पन्न हो जाती है क्योंकि गर्मी के दिनों पानी का जल स्तर बहुत ही नीचे चला जाता हैं। यह संपूर्ण एरिया सूखाग्रस्त हैं। आजीविका के प्रयास में बहुत बड़े पैमाने पर यहा प्रवास होता हैं। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बडे लोगो द्वारा बडे पैमाने पर किया जा रहा है। गरीबी एवं अशिक्षा के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ भी इनको ठीक से नही मिल पा रहा हैं । गरीबी एवं आजीविका के संसाधनों की कमी के कारण स्थानीय लोग बाहर जाने के लिए विवश हैं । पंचायतीराज व्यवस्था का

लाभ ग्रामीण समुदाय को ठीक से नही मिल पा रहा हैं। सयुक्त परिवार दिन प्रतिदिन टूट कर एकाकी परिवार में बदल रहें है। उसके साथ ही कृषि भूमि के बटवारे से खेतो की जोत भी छोटी होती जा रही है जिसके कारण खेतो के उत्पादन पर भी प्रभाव पड रहा है । छोटी जोत होने के कारण किसान उससे बहुत लाभ नही कमा पा रहे है।

इन्ही परिस्थितियों को देखते हुए कर्वी ब्लाक के सेमरिया व बन्दर कोल गॉव का चयन एकीकृत संसाधन प्रबन्धन कार्यक्रम के लिए किया गया। यहॉ पर गॉव वालों के साथ कार्य करने की अच्छी संभवना थी । खेतो में मेढ़ नही थी। खेतों का पानी बह कर नालो मे चला जाता था ऐसी परिस्थिति में वहॉ का उत्पादन कम होना स्वाभाविक था। इस क्षेत्र में अनुसूचित एवं पिछड़ी जाति काफी संख्या में निवास करती है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले एवं दलित परिवारों को इसमें प्राथमिकता दी गयी। इसके पश्चात सामाजिक विकास संस्थान चित्रकूट ने वहॉ कार्यक्रम शुरू किया । परियोजना के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये।

परियोजना के उद्देश्य; (Objectives of the project)

- भूमि समतलीकरण एवं मेडबन्दी के द्वारा कृषिभूमि की गुणवत्ता में वृद्वि करना।
- लक्ष्यित किसानों को प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन द्वारा सिचाई की सुविधा को उपलब्ध करना।
- लक्षित किसानों को जल संरक्षण के संबंध में जागरूक एवं संवेदित करना।
- लक्षित समुदाय का ग्राम पंचायत कृषि विभाग, वन विभाग एवं समाज कल्याण विभाग के साथ अच्छा संबंध स्थापन करना।
- कृषि एवं जल प्रबंधन क्षमता वृद्वि कार्यक्रम आयोजन कर किसानों का सशक्तिकरण करना।
- आजिविका के संसाधनों में वृद्वि करके किसानों को सशक्त बनाना ।

3–कार्यक्रम की उपलब्धियां (Programme findings**)**प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के अन्तर्गत सर्वप्रथम लक्षित समुदाय के खेतों में मेढ़बन्धी का कार्य कराया गया जिसका परिणाम यहा हुआ कि जिन खेतों में पहले कभी पानी नही रूकता था अब उन खेतो में पानी पर्याप्त मात्रा में रूकनें लगा। इसके परिणाम स्वरूप किसानों ने खेतों में पहली बार धान की रोपाई में श्रीविधि का उपयोग किया गया। जिसमें काफी मात्रा में उत्पादन बढा।

- खेत की गुणवत्ता में वृद्वि हुई।
- खेत की मेढ़ो पर अरहर की बोआई करायी गयी इससे किसानों को अतिक्ति लाभ हुआ।
- रवी के अन्तर्गत गेंहू, चना, मटर, सरसों की श्रीविधि से खेती करायी गयीए वुआई कराई गयी, बुआई से पहले बीजों का जैविक विधि से शोधन किया गया था।
- गेहूं , मटर , सरसों की पैदावार अच्छी हुयी लेकिन फरवरी माह में वर्षा होने के करण चने की सभी फसलें इस क्षेत्र में बरवाद हो गयी। वर्षा के कारण चने मे दाने नही लगे जिसके कारण किसानों का नुकसान हुआ।
- सब्जी के अन्तर्गत टमाटर , बैगन , मिर्च , लौकी , कुम्हढा, मूली , पालक, धनिया , गाजर , सेम ,गोभी वैज्ञानिक एवं श्रीविधि से लगायी गयी जिससे किसानों को अतिरिक्त आय हुयी। 10 डेसीमल में लगभग 5 हजार रूपये प्रत्येक किसान के आय में वृद्वि हुयी।
- फलदार पौधे में पपीता लगवाया गया जिसमें फल आये ।

3a: उद्देश्यों की पूर्ति (Fulfilment of Objectives)

Logical Frame Work:-

	Intervention logic	*Objectively Verifiable Indicators*	Means/Sources of verification
Objective 1	Developing quality of lands through bund and land leveling.	1. It increased 85 farmers agriculture land in the project area. 2. It increased crop fertility in the project area.	1. Interaction with farmers. 2.Photographs 3.Reports
Objective 2	Providing irrigation facility to target farmers through natural resource management.	1. It increase 85 farmers irrigated lands in the project area. 2. It increased crop fertility in the project area.	1. Reports 2. Photographs 3. Interaction with Farmers.
Objective 3	Creating awareness and sensitization on water literacy among target farmers.	1. It increased community members' knowledge and skill on water literacy in the project area. 2. It increased community members' knowledge and skill on watershed management.	1. Reports 2. Photographs 3. Interaction with farmers
Objective 4	Making linkages and lessening with agriculture departments, forest department, P R I and social welfare departments to provide them government schemes and provisions.	1. It increased linkage and networking community members 2. It increased sensitization PRI members & community members on watershed management	1. Reports 2. Photographs 3. Interaction with Youth and community members
Objective 5	Organize training and orientation on watershed and agriculture management	1. It increased No. of youth and community members on watershed management and its mplementation. 2. It increased No.of youth and community members knowledge and skill on watershed , new techniques of agriculture, vegetable production , bio farming, insects management etc. 3. It increased the capacity and changed mindset of farmers through visit and capacity building training.	1. Reports 2. Records 3. Photographs 4. Interaction with farmers .

3.b परियोजना प्रारुप एवं कियान्वयन (Project Design and Implementation)-

में गांव के विकास की योजना तैयार करने के लिए गांव का भ्रमण कार्य प्रारम्भ हुआ। पहले चरण में गांव का ट्रांजेक्ट वाक किया गया । पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण पूरे गांव का भ्रमण किया गया और गांव की भौगोलिक स्थिति जानने का प्रयास किया गया। देखा गया की गांव का पूर्वी छोर बहुत ही उबड–खाबड है और बड़े–बड़े नाले जिसमें कार्य करना सम्भव नहीं लग रहा था।उन बड़े–बड़े नालों को बांध कर पानी रोकना संभव नहीं था अतः गांव के पूरब एवं उत्तर दिशा की ओर ऐसा क्षेत्र मिला जहां पर खेतों में मेड़बन्दी नहीं थी और वहां पर पानी रोका जाना जरूरी था। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि उसी हार का चयन कार्य के लिए किया जाये।सेमरिया के पैच में 35 किसानों का चयन पानी रोकने के लिए किया गया। जिनके नामों की सूची नीचे दी गयी है –

Village Panchayat – Semariya Name of the Village- Semariya

S.N.	Chief of House hold	Fathers Name	Caste
1.	Chunbad	Bhagat	Obc/yadav
2.	Ramkhelawan	Madhav	Obc/yadav
3.	Kaira	Baldev	Obc /yadav
4.	Ramjeet	Rrajkaran	Obc /yadav
5.	Ram Khelawan	Dasharath	Obc /yadav
6.	Ram Deo	Sukkhu	OBC/Kurmi
7.	Kashi	Sukhdeo	OBC/Kurmi
8.	Baijanth	Jagganath	SC/Kori
9.	Shivlochan	Ram Kumar	OBC/ Yadav
10.	Ram Awtar	Ram Kumar	OBC/ Yadav
11.	Shiv Charan	Ram lal	OBC/ Yadav
12.	Johari	Hajari	OBC/ Yadav
13.	Sudama	Ram Awtar	OBC/ Yadav
14.	Ram Bishal	Ram Ashraya	OBC/ Yadav
15.	Maiyadin	Ram Ashraya	OBC/ Yadav
16.	Ram Chandra	Ram Ashraya	OBC/ Yadav
17.	Ram Kesh	Ram Khelawan	OBC/ Yadav
18.	Mangal Prasad	Mohan	SC/Kori
19.	Babulal	Mohan	SC/Kori
20.	Shiv Kumar	Mohan	SC/Kori
21.	Sundar Lal	Ram Sevak	SC/Kori
22.	Birja	Puni	SC/Kori
23.	Shankar	Raghubar	SC/Kori
24.	Ram Murat	Raghubar	SC/Kori
25.	Lekhram	Raghubar	SC/Kori
26.	Santosh	Raghubar	SC/Kori
27.	Jiyarava	Ayodhya	SC/Kori
28.	Piyarava	Ayodhya	SC/Kori
29.	Desraj	Ayodhya	SC/Kori
30.	Lotan	Jagganath	SC/Kori
31.	Kallu	Ram Prasad	SC/Kori
32.	Ram Pratap	Kangi	SC/Kori
33.	Rajkumar	Mohan	SC/Kori
34.	Ghanshyam	Jgganath	SC/Kori
35.	Murali	Jgganath	SC/Kori
36.	Bhaiyalal	Ramdayal	Obc /yadav
37.	Rameshwar	Ram Prasad	Obc /Kurmi
38.	Ram Kesh	Ram Khelawan	OBC/Kurmi

39.	Nathu	Ram Gopal	OBC/ Kurmi
40.	Chunbad	Dwarika	Obc /Yadav
41.	Rampal	Ram Dayal	Obc /Yadav
42.	Kallu	Fakira	SC/Kori
43.	Ram Sajivan	Dasharath	OBC/ Yadav
44.	Bachcha	Ram Awtar	OBC/ Yadav
45.	Nathu	Ram Lal	OBC/ Yadav
46.	Chhote Lal	Ram lal	OBC/ Yadav
47.	Shyam Lal	Shivraj	OBC/ Yadav
48.	Ram Swarup	Shivraj	OBC/ Yadav
49.	Baandara	Ram Dayal	Obc/yadav
50.	Lekh Ram	Ram Dayal	Obc/yadav
51.	Ram Bhajan	Ram Sevak	SC/Kori
52.	Ram Narayan	Ram Sevak	SC/Kori
53.	Chhota	Kangi	SC/Kori
54.	Bandari	Ram Jiyan	SC/Kori
55.	Indrapal	Kangi	SC/Kori
Villge – Semariya			
1.	Shyamlal Arakh	Rammnorath	OBC/ Arakh
2.	Pannalal Arakh	Rammnorath	OBC/ Arakh
3.	Jumman Shekh	Kareem Bakhs	OBC
4.	Sarafat Ali	Rajuwa Ali	OBC
5.	Mahboob Ali	Chhotuwa Ali	OBC
6.	Maiyadeen	Abirwa	SC/Kori
7.	Badchhaha	Shivpalwa	SC/Kori
8.	Nandu Yaav	Jagannath Yadav	OBC/ Yadav
9.	Rajena Yadav	Jagannath Yadav	OBC/ Yadav
10.	Raja Buwa Yadav	Jagannath Yadav	OBC/ Yadav
11.	Gaya Prasad Tiwari	Rambhawan Tiwari	G./Braman
12.	Chhuluruva Chamar	Puniwa	SC/Kori
13.	Rajkumar Kumhar	Gappa	SC/Kori
14.	Shivkumar Kumhar	Gappa	SC/Kori
15.	Awadesh Payasi	Chunkawni Payasi	G./Braman
16.	Mithlesh Payasi	Chunkawni Payasi	G./Braman
17.	Kallu Tiwari	Shambhu Tripathi	G./Braman
18.	Srikant Srivastava	Shyamlal	OBC
19.	Chunbad Kori	Makduma	SC/Kori
20.	Bada Kori	Shivlal	SC/Kori
21.	Mohna	Mogara	SC/Kori
22.	Dhirpal Yadav	Gopali	SC/Kori

23.	Munna Patel	Jamuna Patel	OBC
24.	Shivchand Patel	Jamuna Patel	OBC
25.	Dadu bhai tripathi	Chakrawarti	G./Braman
26.	Pyarelal	Shambhu Dayal	OBC
27.	Shyam Karan	Shambhu Dayal	OBC
28.	Phulchand Kori	Jamuna	SC/Kori
29.	Shudarshanacharya		
30.	Devraj	Dayali	SC/Kori

मेडबन्दी के लिए प्राथमिकता के आधार पर बी0पी0एल0 एवं दलित परिवारों का चयन किया गया था 15 जून तक मेडबन्दी का कार्य निर्वाद गति से चलता रहा किसान रात–दिन खेतों में कार्य करते रहे और सफलतापूर्वक मेडबन्दी का कार्य निर्वाद गति से चलता रहा। खण्ड विकास अधिकारी कर्बी के साथ किसानों की बैठक हुयी जिसमें सरकारी योजनाओं के बारे में किसानो को जानकारी दी गयी ।

15 जून के बाद बड़ी तीव्र वर्षा हुई खेतों में खूब पानी भरा लेकिन कोई भी मेड टूटी नहीं किसानों ने बताया कि पहली बार खेतों में इतना पानी रूका हुआ है और वे काफी प्रसन्न थे।लगातार वर्षा के होने एवं पानी के ठहराव को देखकर कुछ किसानों ने धान लगाने का निर्णय लिया। मूंग उडद एवं अरहर का संग्रह बाजार से किया गया। जुलाई माह में किसानों को उडद एवं मूंग का बीज अंकुरण एवं बीज शोधन कराके वैज्ञानिक विधि से बोवाई करा दिया गया ! मेड़ों में अरहर लगाया गया।

धान की नर्सरी तैयार करने से पहले किसानों को बीज शोधन एवं नर्सरी तैयार करने का प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें नर्सरी तैयार करते समय जमीन से 6 इंच ऊपर गोबर की खाद एवं मिट्टी से ऊंचा कर बीज को डालते हैं और धान का बीज शोधित करने के लिए एक किग्रा0 धान में 2 लीटर गुनगुना पानी एक अण्डा एवं नमक की आवश्यकता पड़ती है। गुनगुना पानी में अण्डें को डाल देते है इसके बाद नमक पानी मिला देने के बाद अंण्डा ऊपर आ जाता है तो अंण्डे को निकाल कर धान का बीज डालते है जो बीज ऊपर आ जाता है तो उस बीज को निकाल देते है जो बीज निचे बैठ जाता है। उसे नर्सरी में लाईन से डाल देते है। उसे 10 से 15 दिन के बाद पौधे की रूपाई करते है। रूपाई करते समय लाईन से लाईन 12 ईंच पौध–से पौध 10 ईंच की दूरी पर धान की रो पाई किया जाता है।

50 किग्रा0 सुबबूल के बीज की नाले एवं अनुपजाऊ जमीन पर बुवाई कराया गया जिससे किसानों को जलावनी लकडी मिल सकें एवं मिटटी के कटाव को भी रोका जा सके। परम्परागत एवं श्रीविधि से टमाटर, बैगन एवं मिर्च की खेती किया गया। जिसमें से पांच किसान श्रीविधि से 17 किसान परम्परागत विधी से थे। श्रीविधि में 10 से 15 दिन के पौधे को 1.5 X 1.5, 1.5 गड्डे को खोद कर उस गड्डे में गोबर की खाद एवं मिट्टी से ढक कर उसके ऊपर पौधे से लगाया गया। बीडर द्वारा धान की नीराई व गुडाई फसल में जिवामृत का छिडकाव किया गया। धान के एक पौधे में 46 कल्ले निकले थे। जबकि परम्परागत तरिके से जो धान थे उसमें 32 कल्ले ही थे।

अक्टूबर माह में धान की नीराई गुडाई जीवामृत का छिडकाव सब्जी में दवा का छिडकाव किया गया ।किसान सब्जी के अच्छे फलों को बाजार में ले जाकर बेचे जिससे किसानों को लाभ मिला ।34 किसानों ने पहली बार धनियां, मूली, पालक, गाजर, पपीता, गोभी, एवं फूल की खेती किया ।कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां से मटर, चना, एवं सरसों के बीजों का संकलन किया गया। किसानों की क्षमतावृद्धि प्रशिक्षण, श्रीविधि से चना, मटर, गेहूं, एवं सारसों का प्रशिक्षण दिया गया।

परम्परागत विधि से उत्पादन खरीफ का डेटा वर्ष 2014														
			धान		मूंग		उड़द		ज्वार		तिल		बाजरा	
क्र. स.	किसान का नाम	गाँव का नाम	एरिया (एकड़)	उत्पादन (कि.ग्रां)	एरिया (एकड़)	उत्पादन (कि.ग्रां)	एरिया (एकड़)	उत्पादन (कि.ग्रां)	एरिया (एकड़)	उत्पादन (कि.ग्रां)	एरिया (एकड़)	उत्पादन (कि.ग्रां)	एरिया (एकड़)	उत्पादन (कि.ग्रां)
1	श्री सुदामा	बंदरकोल	1.0	1800	0.4	60	0.4	55	0.4	200	0.4	55	0.4	150
2	रामजीत	बंदरकोल	0.8	790	0.4	65	0.4	75	0.4	180	0.4	90	0.4	200
3	शिवकुमार	बंदरकोल	0.4	980	0.3	55	0.4	75	0.4	150	0.4	80	0.4	100
4	विरजा	बंदरकोल	o1	1800	0.2	50	0.2	40	0.2	200	0.2	85	0.2	200
5	रामकेश यादव	बंदरकोल	0.4	800	0.4	86	0.3	45	0.4	135	0.4	140	0.4	120
6	पप्पू यादव	बंदरकोल	1.0	2400	0.4	70	0.4	76	0.4	140	0.4	220	0.4	120
7	राम भजन	बंदरकोल	0.4	900	0.4	80	0.4	60	0.8	220	0.2	80	0.2	120
8	संतोष	बंदरकोल	0.4	500	0.2	56	0.2	54	0.8	100	0.4	90	0.4	100
9	राजबहादुर	बंदरकोल	1.0	1800	0.4	77	0.4	65	0.0	0	0.4	120	0.4	180
10	राजकुमार	बंदरकोल	0.8	1300	0.4	65	0.3	76	0.8	140	0.4	75	0.4	190
11	सुन्दर	बंदरकोल	0.2	600	0.4	55	0.2	35	0.4	190	0.4	120	0.4	185
12	अच्छेलाल	बंदरकोल	1.0	2300	0.8	95	0.4	85	0.4	176	0.4	86	0.4	135
13	मोहन	बंदरकोल	1.0	1700	0.4	75	0.2	35	0.4	35	0.2	55	0.2	65
14	चुनवाद	बंदरकोल	0.8	1600	0.4	65	0.4	45	0.4	190	0.4	90	0.4	120
15	लाला यादव	बंदरकोल	0.4	600	0.2	50	0.2	45	0.8	220	0.4	76	0.2	90
16	राजकुमार	बंदरकोल	0.4	600	0.4	62	0.4	73	0.4	140	0.4	120	0.4	210
17	शिव चरण यादव	बंदरकोल	0.4	800	0.4	85	0.4	76	0.8	240	0.8	180	0.4	120
18	दिनेश यादव	बंदरकोल	0.4	700	0.4	65	0.2	55	0.8	220	0.8	220	0.4	120
19	संतोष	बंदरकोल	0.4	900	0.4	85	0.3	75	0.4	140	0.4	120	0.2	80
20	देव राज	बंदरकोल	1.0	2200	0.4	64	0.3	77	0.5	177	0.7	130	0.2	40

21	राम चन्द्र	बंदरकोल	1.0	1700	0.2	50	0.4	90	0.8	400	0.8	145	0.2	160
22	छोटा	बंदरकोल	1.0	1600	0.3	67	0.4	77	0.4	180	0.3	180	0.4	65
23	रजन	बंदरकोल	1.0	2200	0.4	75	0.2	90	0.3	180	0.4	65	0.3	180
24	नत्थु	बंदरकोल	0.6	1400	0.2	50	0.2	40	0.4	100	0.2	50	0.2	160
25	राम नारायण यादव	बंदरकोल	1.0	1800	0.4	67	0.4	76	0.4	130	0.4	105	0.4	120
26	राम नारायण कोरी	बंदरकोल	0.8	1200	0.3	70	0.2	35	0.4	105	0.4	140	0.4	120
27	शिव पूजन यादव	बंदरकोल	0.6	1300	0.4	35	0.4	120	0.3	140	0.4	240	0.4	220
28	श्री केशर	बंदरकोल	0.5	1100	0.4	56	0.4	60	0.4	150	0.4	130	0.4	120
29	अरविन्द	बंदरकोल	0.4	900	0.2	76	0.3	47	0.8	310	0.8	240	0.4	120
30	राम रहीस	बंदरकोल	0.4	700	0.4	40	0.4	45	0.4	130	0.4	120	0.4	120
31	चुनवाद	बंदरकोल	0.9	2100	0.3	47	0.4	56	0.4	140	0.4	120	0.4	90
32	इन्द्रपाल	बंदरकोल	1.0	2200	0.5	90	0.0	0	0.8	220	0.4	90	0.4	200
33	कैरा	बंदरकोल	0.5	10	0.4	70	0.2	55	0.4	130	0.6	140	0.7	130
34	लेखरम	बंदरकोल	0.4	120	0.3	55	0.3	35	0.4	120	0.4	140	0.8	140
35	बाबूलाल	बंदरकोल	0.3	180	0.2	55	0.2	35	0.8	220	0.4	180	0.4	240
36	रामरतन	बंदरकोल	0.5	900	0.2	55	0.4	80	0.4	160	0.4	80	0.8	210
37	सीताराम	बंदरकोल	0.8	900	0.2	60	0.4	30	0.8	400	0.8	240	0.8	300
.	**योग**		**23.9**	**45380**	**13.0**	**2383**	**11.6**	**2193**	**18.5**	**6408**	**16.4**	**4637**	**14.6**	**5340**

List of farmers (Demonstration)2014

क्र. स.	किसान का नाम	गाँव का नाम	SRI धान			DSR धान			मूंग			उड़द			ज्वार			तिल			बाजरा		
			एरिया (डेसीमल)	उत्पादन (कि.ग्रां)	कुंतल/ एकड़ (प्रति एकड़)	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन (कि.ग्रां)	कुंतल/एकड़ (प्रति एकड़)	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन (कि.ग्रां)	(कि.ग्रा।) (प्रति एकड़)	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन (कि.ग्रां)	(कि.ग्रा।) (प्रति एकड़)	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन (कि.ग्रां)	(कि.ग्रा।) (प्रति एकड़)	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन (कि.ग्रां)	(कि.ग्रा।) (प्रति एकड़)	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन (कि.ग्रां)	(कि.ग्रा।) (प्रति एकड़)
1	श्री श्यामलाल आरक	सेमरिया	0.00	0	0	23.40	350	15	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0		220		0.00	0	0
2	श्री फुलचन्द्र कोरी	सेमरिया	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	36.00	120	3601	0.00	0	0
3	श्री जुम्मन शेख	सेमरिया	20.25	700	35	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	9.38	18	938	0.00	0	0
4	श्री सराफत अली	सेमरिया	12.05	600	50	0.00	0	0	9.00	25	900	0.00	0	0	0.00	0	0	22.00	65	2201	0.00	0	0
5	श्री महबूब अली	सेमरिया	3.75	200	53	0.00	0	0	6.00	18	600	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0
6	श्री मिथलेश पायसी	सेमरिया	7.50	100	13	13.40	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	6.00	32	600	0.00	0	0
7	श्री मून्ना पटेल	सेमरिया	18.00	700	39	0.00	0	0	13.00	45	1300	11.00	26	1100	11.00	85	1101	8.00	46	800	0.00	0	0
8	श्री लल्लू पटेल	सेमरिया	18.00	580	32	0.00	0	0	14.00	35	1400	3.00	6	300	24.00	95	2401	18.00	35	1800	11.00	40	1100
9	श्री राम आसरे यादव	सेमरिया	11.70	395	34	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0
१०	श्री कैरा यादव	बंदरकोल	8.10	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	32.00	120	3201	18.00	80	1801	0.00	0	0
11	श्री लेखरम कोरी	बंदरकोल	5.63	80	14	0.00	0	0	8.00	52	801	0.00	0	0	28.00	120	2801	19.00	80	1901	12.00	90	1201
12	श्री पप्पू यादव	बंदरकोल	7.38	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	20.00	220	2002	12.00	65	1201	12.00	90	1201
13	श्री राज कुमार	बंदरकोल	10.80	270	25	0.00	0	0	12.00	34	1200	0.00	0	0	22.00	80	2201	32.00	95	3201	26.00	85	2601
14	श्री सीताराम	बंदरकोल	9.37	240	26	0.00	0	0	11.00	25	1100	0.00	0	0	32.00	80	3201	32.00	65	3201	36.00	115	3601
15	श्री बाबू लाल	बंदरकोल	10.80	390	36	0.00	0	0	0.00	0	0	0.00	0	0	24.00	80	2401	25.00	60	2501	33.00	95	3301
16	श्री राजू यादव	बंदरकोल	10.80	240	22	0.00	0	0	12.00	45	1200	8.00	27	800	40.00	165	4002	18.00	85	1801	18.00	105	1801
17	श्री चुनवाद	बंदरकोल	6.50	0	0	0.00	0	0	18.00	75	1801	4.00	16	400	80.00	290	8003	20.00	85	2001	40.00	210	4002
18	श्री सुन्दर कोरी	बंदरकोल	8.80	360	41	0.00	0	0	20.00	90	2001	0.00	0	0	15.00	90	15	20.00	90	2001	40.00	245	4002
योग			169.4	4855		36.8	350		123	444		26	75		328	1425		295.4	1241		228	1075	

बीज अंकुरन

बीज अंकुरन के लिऐ सबसे पहले जिस बीज को हम बोने जा रहे है। उस बीज में से एक मुठ्ठी बीज हम कहीं से भी लेकर उसमें से सौ बीज गिन के अलग कर देते है। 100 बीज को पानी में भीगो देते है। 7 से 8 घंटे बाद पानी से निकाल कर कपडे में बांध कर रख देते है। 36 से 40 घंटे के बाद उसकों देखते है। कि उसमे से कितने बीज अकूरित हुए है। 50 प्रतिशत से अगर कम अंकुरित हुआ है। तो वह बीज बोने योग्य नहीं है। अच्छा तो तब माना जाता है जब 75 प्रतिशत से अधिक अंकुरित हो।

बीज शोधन

बीज शोधन में लगने वाली सामग्री– गुड, गुनगुना पानी, कम्पोस्ट खाद, गोमूत्र, ट्राइकोटरमा पाउडर, कल्चर। बीज शोधन में जितना बीज है उसका दो गुना गुनगुना पानी कर के बीज को सबसे पहले पानी में डाल देते है। जो बीज ऊपर आ जाये तो उस बीज को नीकाल देते है। इसके बाद उसमें गोमूत्र, गुड, कम्पोस्ट खाद मिला देते है। 6 से 7 घंटे बाद पानी से निकाल कर जूट के बोरे में रख देते है। पानी निकल जाने के बाद ट्राईकोटरमा पाउडर मिला देते है। बोने से पहले कल्चर मिलाते है,

श्रीविधि बोने का तरीका

पहले खेत की गहरी जुताई कर के खेत में गोबर की खाद डालते है। उसके बाद छोटी–छोटी क्यारी बना कर मटर का पौध से पौध 4 से 6 ईंच लाईन से लाईन 10 से 12 ईंच किया जाता है। चना पौध से पौध 5 से 6 ईंच लाइन से लाईन 10 से 12 ईंच गेहू पौध से पौध 4 ईंच लाईन से लाईन 8 से 10 ईंच की दूरी पर लगाया जाता है।

रवी डिमास्टेसन सेमरिया एवं बंदरकोल किसान वर्ष- 2014 -15

Rabi Farming-2014-15 season(continue)

क्र.			चना		मटर		गेहूँ	
स	किसान का नाम	गाँव का नाम	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन	एरिया (डेसीमल)	उत्पादन
1	श्री श्यामलाल आरक	सेमरिया	35.65	0	0.00	0	1.50	0
2	श्री रामआसरे यादव	सेमरिया	17.30	0	7.50	0	62.70	500
3	श्री जुम्म्न शेख	सेमरिया	14.30	0	3.00	0	22.40	175
4	श्री सराफत अली	सेमरिया	22.40	0	3.00	0	26.00	200
5	श्री लल्लू पटेल	सेमरिया	3.00	0	1.95	0	26.00	200
6	श्री मैयादीन	सेमरिया	6.90	0	0.00	0	21.60	170
7	श्री शिवचंद पटेल	सेमरिया	6.00	0	7.00	0	9.35	100
8	श्री रामरतन यादव	बंदरकोल	20.25	0	4.25	0	31.00	200
9	श्री सीताराम यादव	बंदरकोल	18.00	0	0.00	0	0.00	0
१०	श्री पप्पू यादव	बंदरकोल	3.75	0	2.50	0	0.00	0
11	श्री लेखराम कोरी	बंदरकोल	16.80	0	4.50	0	15.75	125
12	श्री सहदेव	बंदरकोल	0.00	0	0.00	0	40.38	350
13	श्री चंद्रशेखन	बंदरकोल	9.00	0	0.00	0	0.00	0
14	श्री रामभजन	बंदरकोल	11.50	0	3.75	0	16.80	160
15	श्री रामनारायन कोरी	बंदरकोल	11.25	0	22.95	0	16.50	160
16	श्री राजकुमार कोरी	बंदरकोल	6.50	0	0.00	0	0.00	0
	योग		202.60		60.40	0	289.98	2340

नोट : वर्षा एवं ओला वृस्ति से चना एवं मटर की फसल पूरी तरह ख़राब हो गयी

Vegetable Production Data-2015											
क्र.सं	सब्जी किसान का नाम	फसल का नाम	रकवा)				विधि	उत्पादन	बिक्रय	लागत	लाभ
			लम्बाई	चौड़ाई	(इसक्व्यर)	डेसीमल		(कि.ग्रा.)	(रुपए)	(रुपए)	(रुपए)
			(मीटर)								
१	जुम्म्न शेख	बैगन	8	5	40	1.00	श्रीविधि	500	7000	1500	5500
		टमाटर	10	8	80	2.00	श्रीविधि	180	3200	1000	2200
		मिर्च	12	10	120	3.00	श्रीविधि	400	1100	3000	8000
		प्याज	28	18	450	11.25	श्रीविधि	900	22500	4000	18500
		गोभी	15	12	180	4.50	श्रीविधि	250	500	1200	3800
		प्याज	28	18	450	11.25	श्रीविधि	900	22500	4000	18500
२	काक्षी	टमाटर	12	9	108	2.70	श्रीविधि	395	6400	1200	4200
		मिर्च	12	8	96	2.40	श्रीविधि	400	15500	3500	12000
		खीरा	20	15	300	7.50	श्रीविधि	320	3500	1000	2500
		भिण्डी	20	20	400	10.00	श्रीविधि	200	3000	800	2200
३	लेखराम कोरी	बैगन	7	6	42	1.05	श्रीविधि	800	10000	4000	6000
		टमाटर	9	7	63	1.58	श्रीविधि	175	3000	1500	1500
		मिर्च	9	6	64	1.60	श्रीविधि	250	8300	2500	5800
		मटर	15	7	105	2.63	श्रीविधि	115	3700	1100	2600
		प्याज	22	20	572	14.30	श्रीविधि	1100	27500	5000	22500
४	राजकुमार यादव	बैगन	7	5	35	0.88	श्रीविधि	500	6000	2700	3300
		टमाटर	6	5	30	0.75	श्रीविधि	170	2500	900	1600
		मिर्च	8	6	48	1.20	श्रीविधि	190	5200	1700	3500

3 c परियोजना की उपलब्धियां एवं प्रचार–प्रसार (Project Outputs and Dissemination)-परियोजना के संचालन का प्रथम कार्य मेड़बंदी का हुआ एवं उसके पश्चात् खरीफ की फसल की बुआई की। खरीफ की फसल की जो उपलब्धियां हुई उन उपलब्धियों का ग्रामीण किसानों के साथ गोष्ठी करके चर्चा की गई । बी0 डी0 ओ0 के साथ बैठक कर चर्चा की गई। जब किसानों के कार्यक्षमता वृद्धि का कार्यक्रम आयोजित किया गया उसमें भी उपलब्धियो पर विस्तृत चर्चा की गई। इसी प्रकार का सब्जियों के उत्पादन बढने पर किसानों के आय में वृद्धि हुई। उसके बाद भी किसानों के बीच गोष्ठी करके इस पर विस्त्रित चर्च हुई। यह निर्णय हुआ कि भविष्य में नियोजित तरीको से सब्जी की खेती करके किसान किस प्रकार लाभ कमा सकते है ।

3d

मई 2014 से अगस्त 2015 तक संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	दिनांक	विषय
1.	05.05.2014	किसानों के साथ पहली बैठक
2.	31.05.2014	पैच का चयन
3.	17.06.2014	खरीफ प्लानिंग
4.	05.07.2014	खरीफ प्रशिक्षण
5.	18.09.2014	रवि प्लानिंग
6.	28.11.2014	रवि बोवाई
7.	08.01.2015	कीट एवं रोग
8.	19.01.2015	कृषि विज्ञान केन्द्र गनींवा का भ्रमण
9.	12.04.2015	खरीफ प्लानिंग
10.	28.04.2015	कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां का भ्रमण
11.	03.07.2015	खरीफ प्रशिक्षण
12.	11.08.2015	जगरुकता कार्यशाला

4 **परियोजना प्रबंधन** (Project Management)- परियोजना के कुशल संचालन के लिए एवं परियोजना के प्रावधानों के अनुरूप परियोजना समन्वक , तकनीकी स्टाफ एवं ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता का चयन अप्रैल माह में किया गया। लेखा के संधारण के लिए अंशकालिक रूप से लेखाकार की भी नियुक्ति की गई। समय–समय पर प्रदान (झांसी) द्वारा कभी परियोजना प्रमुख एवं परियोजना समन्वक, कभी तकनीकी स्टाफ एवं कभी ग्रामीण स्तरीय कार्यकर्ता के लिए प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षणों से कार्यकर्ताओं के साथ अन्तःक्रिया के फलस्वरूप भी इनमें काफी क्षमता वृद्वि बढी। इन प्रशिक्षणों से कार्यकर्ताओं की समझ बढी। किसानों के बीच विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का क्रियान्वयन इनके द्वारा सफलता पूर्वक किया गया।

5 **परियोजना का समुदाय पर प्रभाव** (Impact)- एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधंन परियोजना के अन्तर्गत जिन परिवारों का चयन किया गया था। सर्वप्रथम उनके खेतों में मेढ़बन्दी का कार्य हुआ। जिससे कि उनके खेतों में पानी रूका और पहली बार धान की अच्छी फसल हुई । जिससे कि उनके आय में वृद्धि हुई।मेडो पर अरहर की खेती करने से इनकी आय में अतिरिक्त वृद्धि हुई। सब्जी उत्पादन से इनके आय में बृद्धि हुईं। खेतों में पानी रूकनें से स्थानीय कुए में जलस्तर की वृद्धि और मिटटी की गुणवत्ता में वृद्धि हुई।भविष्य में भी इन खेतों में पानी रूकेगा । जिससे मिट्टी की गुणवत्ता बढेगी। और उत्पादन भी बढेगा ।इन सभी गतिविधियों से इन परिवारों में गरीबी निवारण में मदद मिली और भविष्य में इसी प्रकार की गतिविधियों के संचालन से इनकी गरीबी दूर होगी। महिलाओं में शिक्षा के कमी के कारण स्त्री पुरूष का भेद–भाव का अभी उतना मांनसिक परिवर्तन नही हुआ जितना होना चाहिए। ग्राम पंचायत की नियमित बैठकों के आयोजन संबंध में बी0 डी0 ओ0 के साथ चर्चा हुई एवं ग्राम प्रधान के साथ भी चर्चा हुई लेकिन अभी भी ग्राम पंचायत की बैठके नियमित रूप से नही हो पा रही है। दूसरी तरफ शासकीय उदासीनता भी इस संबंध में बनी हुई है। जंगलों के विनाश का कार्य निरंतर जारी है, जंगली लकड़ियों के अलावा फलदार पेड़ो की कटाई भी शुरू हो चुकी है। इन को रोकने का प्रयास किया गया लेकिन अभी सफलता नही मिली। जिन किसानों के खेतों में कार्य हुआ है उनमें पलायन रूका है और वे कृषि के प्रति उत्साहित हुए है। संस्था के हस्ताक्षेप से इस गांव में मानव अधिकार के उलंघन की घटनाए कम हुई, गुणवत्ता युक्त कार्यक्रमों के प्रभावशाली क्रियान्वयन से इस वर्ष विकास की गति अच्छी रही एवं किसानों के जीवन एवं कृषि पर अच्छा प्रभाव पड़ा है एवं भविष्य में भी इसी प्रकार विकास की अच्छी संभावना है।

6 परियोजना का मूल्यांकन (Overall Assessment)–एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन परियोजना के कियान्वन से बंदरकोल गांव के 49 व सेमरिया गांव के कुल 85 परिवारों में मेडबंदी कार्यक्रम से आजीविका संवर्धन कार्य को बल मिला एवं आय में वृद्धि हुई, किसानों के चेहरें पर खुशी का भाव देखने को मिला एवं जल संरक्षण के बारे में किसानों में जागरूता बढी। कृषि विभाग , वन विभाग , ब्लाक एवं पंचायती राज जैसे विभिन्न कार्यालय से इनके संबंध बढे एवं समाज कल्याण के बारे में जानकारी बढी। समय–समय पर किसानों के लिए भ्रमण एवं क्षमता वृद्धि कार्यक्रम आयोजित किये जिससे कार्यक्षमता में वृद्धि हुई। किसानों में मनोवैज्ञानिक क्षमता की भी वृद्धि हुइ एवं आगे बढने की प्रवृत्ति बढी। कृषि की नई–नई तकनीक एवं बीज शोधन एवं बीज उपचार के विभिन्न पद्धतियों का ज्ञान हुआ। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यदि संपूर्णता में देखा जाए तो किसानों को बहुत अधिक लाभ हुआ है। यदि इसी प्रकार यह कार्य निरन्तर प्रच साल चला दिया जाए तो बहुत अधिक परिवर्तन देखने को मिलेगा।

7 प्रचार–प्रसार एवं जागरुकता कार्यशाला (Dissemination Workshop)

दिनांक 11 अगस्त 2015 दिन मंगलवार को सामाजिक विकास संस्थान चित्रकूट द्वारा संचालित एकीकृत प्राकृतिक संस्थान प्रबंधन परियोजना के तहत बन्दरकोल एवं सेमरिया के किसानो का प्रचार–प्रसार एवं जागरुकता कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय रामायण मेला परिसर सीतापुर चित्रकूट में सम्पन्न हुआ कार्यक्रम संचालन परियोजना समन्वयक जितेन्द्र प्रताप सिंह कार्यक्रम की रुपरेखा बताते हुये कहा कि किसानो को अपने खेत में प्रबन्धक के रुप में कार्य करना चाहिये है। मजदूर समझ कर नही, किसानो का अपनी 1 साल की योजना बनाकर खेती करेगें तो खेती की उत्पादकता बढेगी।

रामहंस जी जिला सलाहकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन ने बताया कि हरित क्रान्ति के पश्चात् हमारे देश में उत्पादन क्षमता में तीव्रतम वृद्धि हुई है। किन्तु रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से अनाजों की गुणवत्ता में कमी आयी है। इसका मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण में बुरा प्रभाव पड रहा है। खेत में मिटट्ी को 18 पोषक तत्वों की आवश्यकता अच्छे उत्पादकता के लिये होती है। किसानो को दहलनी फसल की उत्पादकता को बढाने के लिये कहा। जमीन में कार्बनिक पदार्थ जैव उर्वरक जिप्सम माइक्रोन्यूट्रिमेन्टस को प्रयोग करने से उर्वरको का प्रयोग कम किया जा सकता है।

जिला कृषि रक्षा अधिकारी चित्रकूट के यहां कार्यरत कृषि रक्षा पर्यवेक्षक रमेश कुमार कुशवाहा ने बताया कि जैविक खेती के लिये हमेशा गर्मी की जुताई एवं हरी खाद की बुआई करना जरुरी रहता है। फसलों को कीटों से रक्षा करने के लिये एकीकृत नाशी कीट प्रबन्धन के अर्न्तगत गोमूत्र, नीम, धतूरा, लहसून, मदार, मिर्च, अदरक आदि से निर्मित कीटनाशकों या जैविक कीट नीशियों वैवेरिया, वैसियाना, बीटी, एन0पी0वी0, ट्राइकोडर्मा आदि का प्रयोग करना लाइट ट्रेप फेरोमोन ट्रेप खेतो में लगाने की सलाह दी। साथ ही मित्र कीटों की संरक्षण पर बल देने हेतु कहां मृदा परीक्षण के उपरान्त उर्वरकों के पयोग के लिये कहा गया तथा बताया गया कि किसान अपनी खेत की मिट्टी को जांच के लिये कृषि विभाग अथवा प्रयोगशाला भेजें इसके लिये किसान अपनी खेत के 5–6 जगहो से अलग–अलग हिस्सों से मिट्टी लेकर आपस में मिला लें। फिर उसे आधा करें यह किया तब तक करें जब तक मिट्टी का वजन 500 ग्रा न हो जायें। यह मिट्टी समग्र खेत की मिट्टी नमूने के लिये उपयुक्त होगी। भूमि शोधन के लिये ब्यूवेरिया वैसियाना का प्रयोग करके दीमक कीट का बचाव किया जा सकता है। व फसलो की नियमित निगरानी के साथ खेत के मेडो की सफाई रखना चाहिये किसान बीजो को थीरम, कार्वेण्डाजिम, ट्राईकोडर्मा से शोधित कर ही बोये इससे फसलो में रोग लगने की कम समस्या रहती है। फसलो में दवा का छिडकाव शाम को करे क्योकि दिन मे मित्र कीडे व रात्रि में शत्रु कीडे निकलते है। साथ यह भी बताया कि जहां तक सम्भव हो जैविक रासायनो का ही प्रयोग करें यदि जैविक रासायनो से कीट नियन्त्रित नही होता तो कम जहरीली एवं सुरक्षित रासायनों का प्रयोग करे, बीज शोधन एवं जैविक रासायन पर 75 प्रतिशत एवं अन्य दवाओं पर 50 प्रतिशत अनुदान कृषि विभाग द्वारा अनुमान्य है।

उपकृषि निदेशक जगदीश नारायण ने उ0प्र0 सरकार की चल रही पारदर्शी योजना के बारे में बताया कि किसान खतौनी पासबुक की फोटो कॉपी पहचान पत्र और मो0न0 लेकर जिला कृषि कार्यालय में रजिस्ट्रेशन कराकर कृषि सामाग्री प्राप्त करें। इसमें दी जाने वाली सब्सीडी सीधे किसान के खाते में जायेगी।

ग्रामोदय वि0वि0 चित्रकूट के प्रोफेसर डा0 पवन सिरोठिया जी ने बताया कि खेत मे कोई भी रासायनिक दवा का इस्तेमाल सोच समझकर करना चाहिये। इसकी मात्रा का पता मृदा स्वास्थ्य कार्ड से ही चलता है। खेत की उपजाऊ मिट्टी को 18 पोषक तत्वो मे कार्बन, आक्सीजन, हाइड्रोजन जो प्रकृति में प्रचूर मात्रा में उपलब्ध है असानी से मिल जाते है फास्फोरक पेड की जडो को मजबूत बनाता है पोटास पेडो मजबूती देता है। ऐसे अनेक तत्वो की पूर्ति किसान अपने मृदा को नही दे पाता इसकी पूर्ति गोबर की खाद्य हरी खाद्य को डालने से की जा सकती है। गोबर खाद्य के लिये पशु धन को बढावा दें। हरी खाद्य सनई, मूंग, उडद, छिडक दे। सनई 35 से 40 दिन मूंग उडद 20 से 25 दिन होने के बाद जुताई कर मिला दे वह जब सड जायेगी तो बनी खाद्य सभी 18 पोषक तत्वो की पूर्ति करेगी। यह खाद्य खेत के लिये 3 साल तक पर्याप्त होती है। नैडप कम्पोस्ट द्वारा निर्मित खाद्य भी सभी पोषक तत्वो की पूर्ति करती है। इसे बनाने के लिये हरी पत्ती, गोबर, गोमूत्र, 2 इंच दीमक की मिट्टी की परत, 9 इंच गोबर की परत, नीम की टहनी, कचडा, भूसा, पत्ती, सब्जी का कचडा आदि डाले इस प्रकार तीन परत बनाकर मिट्टी से लेप करे। अन्तिम लेप करते समय थोडा

यूरिया छिडक दे उससे तैयार खाद्य सारे तत्वों की पूर्ति करता है। कम्पोस्ट खाद्य हरी खाद्य, गोबर खाद्य के प्रयोग से खेती को सिचांई की कम जरुरत पडती है।

डा0 वाई0के0 सिंह ने बताया की किसानो को ज्यादा से ज्यादा जैविक खाद्य का ही प्रयोग करना चाहिये रासायनिक खादो से स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर बूरा प्रभाव पडता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे ग्रामोदय वि0वि0 के कृषि संकाय के प्रोफेसर डा0 के0के0 सिंह ने किसानो को बताया कि उन्नत शील बीजो का प्रयोग करने से उत्पादन अच्छा होगा। जिससे आय में वृद्धि होगी। सेमरिया एवं बन्दरकोल के किसानो ने बताया कि सामाजिक विकास संस्थान द्वारा खेतो मे मेडबन्दी करने से वर्षा का जल खेत में रुका हुआ है। जिससे कुऐं का जलस्तर 3 फीट ऊपर आ गया खेतो में नमी रहती है। फसल का उत्पादन दो गुना हो गयी है।

8. सुझाव (Recommendations)- एकीकृत प्राकृतिक प्रबंधंन संसाधन परियोजना के संचालन एवं क्रियान्वयन से सामाजिक विकास संस्थान के सभी कार्यकर्ताओं को प्राकृतिक संसाधन प्रबंधंन का एक नया पाठ सीखने को मिला। यह सीख भविष्य की परियोजना के संचालन में बहुत ही मददगार सावित होगा। इस क्षेत्र में यदि इस परियोजना को पांच साल और चलाया जाए तो किसानों को बहुत अधिक लाभ होगा एवं सतत् विकास में मील का पत्थर सावित होगा।

केस स्टडी–1

महबूब अली–श्रीमान **महबूब अली** जी ग्राम **सेमरिया** के निवासी है। जिनके खेत में समेकित प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के अन्तर्गत मेडबन्धी कार्य किया गया है। मेडबन्धी के वाद वर्षा का जल किसान के खेत में रूकने लगा। जब किसान के खेत में मेड नही थी तो खेत का पानी बह कर नाले में चला जाता था। नाले से नदी में चला जाता जिसका उपयोग किसान नही कर पाते थे। साल मे अरहर , चना और गेहूं के अलावॉ अन्य फसलो का उत्पादन नही होता था। जब खेत मे मेड पड़ गयी तो खेत का पानी खेत मे रूकने लगा। कुऍ का जल स्तर ऊपर आ गया। खेतों में नमी भी बनी रही जब खेत में नमी आ गयी तो किसान धान की खेती परम्परागत तरीके से करते आ रहे थे उसी खेत में किसान को श्रीविधि से धान लगाने के लिए बताया गया तो किसान तैयार हुआ। बीज शोधन की सारी प्रक्रिया अपनायें। नर्सरी में 14 दिन का पौधा हो गया तो लगाने के लिए जब दूरी पर हम नही लगायेगें क्योंकि हमारा खेत खाली पड़ा रह जायेगा। इतने छोटे पौधे को इतनी दूरी पर नही लगायेगें। थोड़ी सी जगह में आप अपनी विधि वाला लगाइए। 3 डेसीमल में श्रीविधि से धान का पौधा लगाया गया। 15 दिन तक पौधा बहुत ही कमजोर था लेकिन जब पहली गुडाई हुयी तो बड़ी तेजी से बढ़ना शुरू हो गया जिसमें 40 ादिन के पौधे में 36 कल्ले निकले थे। 45 दिन के बाद किसान ने बताया कि एक पौधे में 42 कल्ले निकल आये थे। जिसमें 200 किलोग्राम पैदावार उसी 3.75 डेसीमल खेत में हुआ। 53 **कुंतल प्रति एकड़ उत्पादन हुआ** उतना पैदावार परम्परागत तरीके से नही हुआ था। वही किसान रवी की फसल में मटर , चना , गेहूं अपने आप से प्रेरित होकर श्रीविधि से लगाया है।

केस स्टडी–2

श्रीमान लेखराम जी ग्राम बन्दर कोल के निवासी है जिनके खेत में समेकित प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन परियोजना के अन्तर्गत मेड़बन्धी कार्य किया गया। मेड़बन्धी होने के पश्चात् इनके खेतों में पानी रूकने लगा। इन्होने कृषि कार्य करने के लिए मन बनाया। खरीफ में इन्होने पहली बार अपने खेत में धान की खेती श्रीविधि से किया। धान में इन्होने बीज शोधन करने के बाद नर्सरी तैयार करके नर्सरी में बीज को डाले थे। 16 दिन के पौध को लाइन से लाइन तथा पौध से पौध एक निश्चित् दूरी पर लगाये थे। निराई–गुडाई एवं जीवामृत का छिड़काव किसान समय–समय पर करता रहा है। 5.63 डेसीमल में .8 कुन्टल धान की पैदावार हुयी थी। जहां पर किसान को वर्ष भर में एक ही फसल से सन्तुष्ट होना पडता था। उसी खेत में किसान तीन–तीन फसले ले रहा है साथ ही साथ किसान सब्जी की खेती कर रहा है जिससे किसान के आय में वृद्वि हुयी है। 5 डेसीमल जमीन में किसान टमाटर, बैगन एवं मिर्च की खेती की थी। जिससे टमाटर में किसान को उतना लाभ नही मिला। लेकिन बैगन में किसान को अच्छी आय प्राप्त हुयी। 1.1 **डेसीमल एरिया में** 800 किलोग्राम बैगन में 7000 रू का मुनाफा हुआ। 14.3 **डेसीमल एरिया में** 1100 किलोग्राम **प्याज** में 22500रू का मुनाफा हुआ।

1.6 **डेसीमल एरिया में** 250 किलोग्राम मिर्च में 5800रू का मुनाफा हुआ। किसान ने बताया कि सब्जी में कुल मिलाकर 80000रू की आय में वृद्वि हुयी। किसान ने बताया कि इसी खेत से किसान को 80000रू का मुनाफा हुआ।

श्रीमान लेखराम जी ने बताया कि खरीफ में सब्जी की अच्छी फसल थी तो रवी में भी सब्जी की खेती करने का निर्णय लिया। रवी में किसान मूली, पालक, धनिया, गाजर , पपीता , गोभी, लौकी , सेम , कोहडा एवं मटर की खेती की । जिसमें किसान को 5000 रू का मुनाफा हुआ था। जायद में किसान भिन्डी , करेला , कोहडा , लौकी , तोरोइ , मूली , पालक एवं गाजर की खेती की है। किसान ने बताया कि सब्जी अपने खाने के लिए बाजार से लाते थे। इस वर्ष हमारे खेत में हो गयी । हम तो स्वयं खाये। हमारे आस–पास के लोग भी सब्जी हमारे खेत से खाने के लिए ले गये और वो लोग भी सब्जी की खेती करने के लिए सोचा है कहे की अगले वर्ष हम भी अपने खेत में सब्जी की खेती करेगें।

केस स्टडी–3

श्री राजकुमार –श्रीमान **राजकुमार** जी ग्राम बन्दरकोल के निवासी है। जिनके खेत में समेकित प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के अन्तर्गत मेडबन्धी कार्य किया गया है। मेड़बन्धी कार्य होने के बाद में आपने परम्परागत तरीके से खेती करते रहे। इन्होने देखा खरीफ की फसल में जो किसान धान एवं सब्जी की खेती श्रीविधि से किये उनकी फसल अच्छी हुयी। किसान के आय में वृद्वि हुई। तो इन्होने किसान क्षमता वृद्वि कार्यक्रम में आये। वहॉ पर आने के बाद इनका मन रवी की फसल श्रीविधि से करने का निर्णय लिये। है। किसान टमाटर, बैगन एवं मिर्च की खेती की थी। जिससे टमाटर में किसान को उतना लाभ नही मिला। लेकिन बैगन में किसान को अच्छी आय प्राप्त हुयी। .9 **डेसीमल एरिया में** 500 किलोग्राम बैगन में 3300 रू का मुनाफा हुआ। 1.2 **डेसीमल एरिया में** 190 किलोग्राम मिर्च में 3500रू का मुनाफा हुआ। किसान ने बताया कि सब्जी में कुल मिलाकर 60000रू की आय में वृद्वि हुयी। किसान ने बताया कि इसी खेत से किसान को 60000रू का मुनाफा हुआ।

जिस खेत में किसान को 8000रू का फायदा होता था उसी खेत की आय 60000रू में जा पहुंची। उसी प्रकार किसान 28 डेसीमल में चना **मटर** श्रीविधि से किया है जो प्राकृतिक आपदा के कारण नष्ट हो गई। 7 डेसीमल में गेहूं की खेती किया है जिसमें एक पौधे में 18 से 20 कल्ले निकल आये।

नोट–

1–110 किसान के यहॉ मूली , पालक , गाजर , गोभी , टमाटर , पपीता , बैगन , मिर्च , लौकी , कुहडा , रेरूआ ,एवं करैला लगाये है जो स्वयं खाने के उपयोग में कर रहे है ।

बीज अंकुरण एवं शोधन

खरीफ की बुवाई एवं फसल

रबी की बुआई

बेड पद्धति से सब्जी उत्पादन

सब्जी उत्पादन

प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवां का भ्रमण

कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवां भ्रमण

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

जैविक कीटनाशकों की तैयारी

जैविक विधि से सब्जी उत्पादन

मचान विधि से सब्जी उत्पादन

किसानों को खरीफ खेती के बताए तरीके

चित्रकूट | हिन्दुस्तान संवाद

प्रशिक्षण

- सेमरिया व बंदरकोल गांव में सामाजिक विकास संस्थान ने आयोजित किया कार्यक्रम
- आम, अमरूद, पपीता, बेर, बेल, कटहल एवं फूलों की खेती कर आय बढ़ाने की सलाह

सामाजिक विकास संस्थान चित्रकूट द्वारा संचालित एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन परियोजना के अन्तर्गत सेमरिया व बन्दरकोल ग्राम पंचायत में जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया। इसमें खरीफ खेती के लिए किसानों को नई जानकारियां दी गईं। कृषि विभाग की कई योजनाओं के बारे में भी बताया गया।

जिला कृषि रक्षा इकाई कर्वी के रमेश कुशवाहा ने फसल की सुरक्षा के विषय में कहा कि दिन में मित्र कीड़े रात्रि में शत्रु कीड़े निकलते हैं। फसल में दवा दिन में नहीं शाम को डालना चाहिए, फसल में फूल आने से पहले ही दवा का छिड़काव करें। पारदर्शी योजना रजिस्ट्रेशन के लिए खतौनी, पासबुक की फोटोकापी, पहचान पत्र व मोबाइल नम्बर लेकर जिला कृषि कार्यालय में रजिस्ट्रेशन कराकर कृषि सामाग्री प्राप्त करें। इसमें दी जाने वाली सब्सिडी सीधे किसान के खाते में जायेगी। मृदा विशेषज्ञ पवन शिरोठिया ने कहा कि खेत में पांच वर्ष में तीन अंगुल मिट्टी बनकर तैयार होती है। उद्यान विशेषज्ञ डॉ शिवशंकर सिंह ने सब्जी और फलदार वृक्षों की खेती के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा आम, अमरूद, पपीता, बेर, बेल, कटहल एवं फूलों की खेती कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ केके सिंह ने किसानों को उन्नतिशील बीज प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। अन्त में ग्रामोदय विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के प्रो डॉ विनोद शंकर सिंह ने सभी किसनों से कहा कि जो जानकारी यहां मिली है उसका प्रयोग अपने खेतों में करें और अधिक उत्पादन लें। संचालन परियोजना समन्वयक जितेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस मौके पर हिमांशु सिंह, अभिषेक पाण्डेय, नरेश कुमार, राहुल त्रिपाठी थे।

www.samaylive.com

राष्ट्रीय सहारा

सच कहने की हिम्मत

राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

चित्रकूट

कानपुर । शुक्रवार • 14 अगस्त • 2015

रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल सोच समझकर करें किसान

चित्रकूट, (एसएनबी)। सामाजिक विकास संस्थान द्वारा संचालित एकीकृत प्राकृतिक संस्थान प्रबंधन परियोजना के तहत बंदरकोल एवं सिमरिया के किसानों का प्रचार प्रसार एवं जागरूकता कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय रामायण मेला परिसर में गुरुवार को किया गया। इसमें किसानों के अच्छे उत्पादन के लिये विभिन्न तकनीकियों की जानकारी कृषि विशेषज्ञों द्वारा दी गई।

चित्रकूट : कार्यशाला में विशेषज्ञ । फोटो : एसएनबी

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के जिला सलाहकार रामहंस ने बताया कि हरित क्रांति के पश्चात हमारे देश में उत्पादन क्षमता में तीव्रतम वृद्धि हुई है। लेकिन रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से अनाजों की गुणवत्ता में कमी आई है। इसका मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण में बुरा प्रभाव पड़ रहा है। खेत में मिट्टी को 18 पोषक तत्वों की आवश्यकता अच्छे उत्पादकता के लिये होती है। जिला कृषि रक्षा कृषि रक्षा पर्यवेक्षक रमेश कुमार कुशवाहा ने बताया कि जैविक खेती के लिये हमेशा गर्मी की जुताई एवं हरी खाद के बुआई करना जरूरी होता है। फसलों की कीटों से रक्षा करने के लिये एकीकृतनाशी कीट प्रबंधन के अन्तर्गत गोमूत्र, नीम, धतूरा, लहसुन, मदार, मिर्च, अंदरक आदि से निर्मित कीटनाशकों का प्रयोग करना चाहिये। उप कृषि निदेशक जगदीश नारायण ने उत्तर प्रदेश में चल रही विभागीय योजनाओं के संबंध में विस्तार से जानकारी दिया। उन्होंने बताया कि किसान खतौनी, पास बुक की फोटोकॉपी, पहचान पत्र लेकर जिला कृषि कार्यालय मे रजिस्ट्रेशन करा कृषि सामग्री प्राप्त कर लें। इसमें दी जाने वाली सब्सिडी सीधे किसान के खाते में जायेगी। ग्रामोदय विवि के प्रोफेसर डा. पवन सिरोठिया ने बताया कि खेत में कोई भी रासायनिक दवा का इस्तेमाल सोचसकर करना चाहिये। अध्यक्षता कर रहे ग्रामोदय विवि के कृषि संकाय के प्रोफेसर डा. केके सिंह ने किसानों को बताया कि उन्नतिशील बीजों का प्रयोग करने से उत्पादन अच्छा होगा। जिससे आय में भी वृद्धि होगी। इस मौके पर ग्रामोदय विवि के समाज कार्य विभाग के प्रोफेसर डा विनोद शंकर सिह, हिमांशु, अभिषेक, वीरेन्द्र, राहुल, राम प्रकाश मौजूद रहे।

■ रामायण मेला परिसर में हुआ जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

चित्रकूट

कानपुर। शनिवार। 2 मई 2015

अमर उजाला

उन्नतशील बीज बोएं किसान

चित्रकूट। सामाजिक विकास संस्थान द्वारा समेकित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन परियोजना के तहत बंदरकोल और सेमरिया गांवों में चल रहा किसानों का दो दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम शुक्रवार को समाप्त हो गया। इसमें किसानों को उन्नत और नई तकनीक की जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां में विशेषज्ञों ने किसानों को वर्मी कंपोस्ट, जीवामृत, घनजीवामृत, मटका खाद और नई तकनीक की जानकारी दी। अरुण शुक्ला ने बताया कि किसानों को नई तकनीक के तहत उन्नतशील बीज बोने चाहिए। इससे उन्हें अच्छी पैदावार मिलेगी और मुनाफा भी होगा। वीरेंद्र सिंह ने आम, नींबू, करौंदा, अमरूद, आंवला और कटहल की प्रजातियां बताईं। दल का नेतृत्व संस्था के परियोजना समन्वयक जितेंद्र प्रताप सिंह ने किया।

दैनिक जागरण

चित्रकूट जागरण

कानपुर। 5 जुलाई 2015

अमर उजाला CU चित्रकूट

प्रशिक्षण के दौरान मौजूद किसान और जानकारी देते कृषि विशेषज्ञ।

दिन में कीटनाशक दवा का छिड़काव न करें

अमर उजाला ब्यूरो

चित्रकूट। सामाजिक विकास संस्थान चित्रकूट के संयोजन में चल रही एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन परियोजना के तहत सेमरिया व बंदरकोल ग्राम पंचायत में किसानों को खरीफ की खेती के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। इसमें जिला कृषि रक्षा इकाई कर्वी के कृषि विशेषज्ञ रमेश कुशवाहा ने किसानों को बताया कि फसल में दिन में कीटनाशक दवा नहीं डालनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि दिन में मित्र कीड़े और रात में शत्रु कीड़े निकलते हैं। इसलिए फसल में हमेशा शाम को कीटनाशक दवा डालनी चाहिए।

किसानों को बताया कि फसल में फूल आने से पहले ही दवा का छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि पारदर्शी योजना रजिस्ट्रेशन के लिए खतौनी, पासबुक की फोटोकॉपी, पहचान पत्र और मोबाइल नंबर लेकर जिला कृषि कार्यालय में रजिस्ट्रेशन कराकर कृषि सामग्री प्राप्त करें। इसमें दी जाने वाली सब्सिडी सीधे किसान के खाते में जाएगी। मृदा विशेषज्ञ पवन शिरोठिया ने कहा कि खेत में मेड़बंदी व समतलीकरण करके मिट्टी के कटाव को रोका जा सकता है। उद्यान विशेषज्ञ डा. शिवशंकर सिंह ने सब्जी और फलों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि आम, अमरूद, पपीता, बेर, बेल, कटहल एवं फूलों की खेती कर किसान आय बढ़ा सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. केके सिंह ने की। उन्होंने किसानों से उन्नतशील बीज बोने को कहा।

सेमरिया और बंदरकोल ग्राम पंचायत में किसानों को दिया गया प्रशिक्षण

विशेषज्ञों ने कहा, रात में शत्रु कीड़े निकलते तभी फसलों में डालें दवा

बताया कि इससे अच्छी पैदावार होगी और मुनाफा भी मिलेगा। अंत में ग्रामोदय विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के प्रो. डॉ. विनोद शंकर सिंह ने सभी किसानों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन परियोजना समन्वयक जितेंद्र प्रताप सिंह ने किया।

कार्यक्रम में ग्रामोदय विश्वविद्यालय समाज कार्य के छात्र हिमांशु सिंह, अभिषेक पांडेय, नरेश कुमार, राहुल त्रिपाठी, मोहित सोनी, अजरा अख्तर, संतकुमार, मिथलेश पयासी, ग्राम शिल्पी कृष्णदत्त पटेल, परिवार परामर्श केंद्र की परामर्शदात्री रीता सिंह आदि उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान कानपुर •शुक्रवार •14 अगस्त 2015 06

मजदूर नहीं, प्रबंधक बने किसान

चित्रकूट | हिन्दुस्तान संवाद

सामाजिक विकास संस्थान द्वारा एकीकृत प्राकृतिक प्रबंधन परियोजना के तहत रामायण मेला परिसर में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यहां बंदरकोल एवं सेमरिया गांव के किसानों को खेती के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई। वक्ताओं ने कहा कि किसान को अपने खेत में प्रबंधक के रूप में काम करना चाहिए, मजदूर मानकर नहीं। साल भर की योजना पहले से ही बना लेनी चाहिए।

गुरुवार को रामायण मेला परिसर में हुई कार्यशाला में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के जिला सलाहकार ने कहा कि हरित क्रांति के बाद देश में फसलों की उत्पादन क्षमता बढ़ी है, लेकिन रासायनिक उत्पादों का प्रयोग करने से उत्पादकता में कमी भी आई है। कृषि रक्षा पर्यवेक्षक रमेश कुशवाहा ने बताया कि जैविक खाद के लिए हमेशा गर्मी में जुताई कराना चाहिए। उप कृषि निदेशक जगदीश नारायण ने कई योजनाओं की जानकारी दी। ग्रामोदय विवि के प्रो. पवन सिरोठिया ने भी कई महत्वपूर्ण जानकारी किसानों को दी।

जागरूकता गोष्ठी में किसानों को दी गई जानकारी। • हिन्दुस्तान

राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
चित्रकूट सहारा
कानपुर । रविवार • 5 जुलाई • 2015

खरीफ की बुआई के लिए किसानों को बताये गुर

चित्रकूट, (एसएनबी) ।सामाजिक विकास संस्थान द्वारा संचालित एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन परियोजना के तहत सेमरिया और बंदरकोल में खरीफ की खेती के लिये जागरूकता प्रशिक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये जिला कृषि रक्षा इकाई के रमेश कुशवाहा ने फ़सल सुरक्षा के विषय में किसानों से कहा कि दिन में जो कीड़े फसलों में लगते है वह मित्र होते हैं। वहीं रात में शत्रु कीड़े फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं ऐसे में दवाओं का छिड़काव फसल में हमेशा शाम को करना चाहिये। उन्होंने कहा कि कृषि सामग्री प्राप्त करने के लिये कृषक अपना रजिस्ट्रेशन जिला कृषि कार्यालय में करायें। वहीं मृदा विशेषज्ञ पवन सिरोटिया ने कहा कि पांच वर्ष में तीन अंगुल मिट्टी खेत में नई लेयर बनाती है। जिसके बचाव के लिये मेडबंदी व समतलीकरण आवश्यक है। उद्यान विभाग के डॉ शिवशंकर सिह ने सब्जी और फलदार वृक्षों की खेती के लिये किसानों को प्रोत्साहित किया। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ के के सिंह ने कहा कि किसान उन्नतशील बीज बोयें। ग्रामोदय विश्वविद्यालय समाज कार्य विभाग के डॉ विनोद शंकर सिंह ने कहा कि कृषक पैदावार के लिये विशेषज्ञों की सलाह लें तो लाभ निश्चित है। कार्यक्रम का संचालन परियोजना समन्यवक जितेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। वहीं इस दौरान समाज कार्य विभाग के छात्र हिमांशू सिंह, अभिषेक पाण्डेय, नरेश कुमार , राहुल त्रिपाठी, मोहित सैनी, आजरा अख्तर, संत कुमार, मिथलेश पयासी व कृष्णदत्त पटेल, रीता सिंह आदि प्रमुख रूप मौजूद रहे।

चित्रकूट : जानकारी देते विशेषज्ञ। फोटो : एसएनबी

कानपुर शुक्रवार 14 अगस्त 2015

अमर उजाला चित्रकूट

प्रबंधक बन काम करें किसान

कृषि जागरूकता कार्यशाला का आयोजन, उर्वरकों के अधिक प्रयोग से अनाज की गुणवत्ता में आ रही कमी

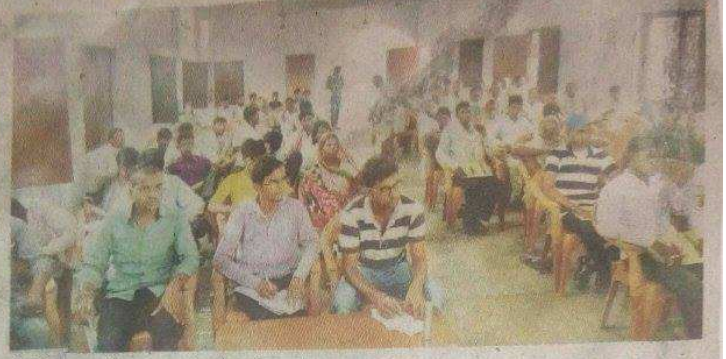

सामाजिक विकास संस्थान की जागरूकता कार्यशाला में बोलते उप कृषि निदेशक जगदीश नारायण और मौजूद किसान।

अमर उजाला ब्यूरो

चित्रकूट। एकीकृत प्राकृतिक संसाधन परियोजना के तहत गुरुवार को राष्ट्रीय रामायण मेला परिसर में कृषि जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें संचालक परियोजना समन्वयक जितेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि किसानों को खेत में प्रबंधक के रूप में काम करना चाहिए, मजदूर बनकर नहीं। अगर एक साल की कार्ययोजना बनाकर काम करेंगे तो उत्पादकता बढ़ेगी। इस मौके पर वक्ताओं ने इस बात पर चिंता जताई कि रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से अनाज की गुणवत्ता कम हो रही है।

सामाजिक विकास संस्थान के तत्त्वावधान में हुई कार्यशाला में जिला सलाहकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन रामहंस ने बताया कि हरित क्रांति से देश में उत्पादन क्षमता बढ़ी है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से अनाज की गुणवत्ता के साथ ही मनुष्य का स्वास्थ्य और पर्यावरण भी प्रभावित हो रहा है। बताया कि खेत में अच्छी उत्पादकता के लिए मिट्टी को 18 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को दलहनी सलाह दी। बताया कि कार्बनिक पदार्थ जैव उर्वरक जिप्सम माइक्रोन्यूट्रिमेंट्स का प्रयोग करना चाहिए। कृषि रक्षा पर्यवेक्षक रमेश कुमार कुशवाहा ने एकीकृत नाशी कीट प्रबंधन को जरूरी बताया। उप कृषि निदेशक जगदीश नारायण ने प्रदेश सरकार की पारदर्शी योजना की जानकारी दी। बताया कि किसान खतौनी पासबुक की फोटोकॉपी, पहचान पत्र, मोबाइल नंबर लेकर जिला कृषि कार्यालय में रजिस्ट्रेशन कराकर कृषि सामग्री प्राप्त करें। इससे सब्सिडी सीधे खाते में आएगी।

ग्रामोदय विवि के प्रोफेसर डा. पवन सिरोठिया ने बताया कि खेत में किसी भी रासायनिक दवा का प्रयोग सोच समझकर करना चाहिए। डा. वाईके सिंह ने बताया कि किसानों को ज्यादा से ज्यादा जैविक खाद का ही प्रयोग करना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्रामोदय विवि के कृषि संकाय के प्रोफेसर डा. केके सिंह ने की। सेमरिया और बंदरकोल के किसानों ने बताया कि खेतों में मेड़बंदी से ही वर्षा का पानी खेत में रुका हुआ है। ग्रामोदय विवि के प्रो. डा. विनोद शंकर सिंह ने सभी का धन्यवाद दिया। मौके पर हिमांशु, अभिषेक, वीरेंद्र, राहुल, रामप्रकाश आदि

'सोच विकसित कर मेहनत करें'

अमर उजाला ब्यूरो

चित्रकूट। जिला औद्यानिक मिशन की योजनाओं में किसानों के चयन के लिए समिति का गठन किया जाए। ये बात डीएम नीलम अहलावत ने कलेक्ट्रेट सभागार में जिला औद्यानिक मिशन समिति की बैठक में कही। बैठक में आम, आंवला, अमरूद, पपीता, नींबू पुष्पक्षेत्र, मसाला, एकीकृतनाशी जीव प्रबंधन, वर्मी कंपोस्ट खाद, ग्रीन हाउस, पाली हाउस, उद्यान रोपण आदि पर चर्चा की गई। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वे सोच विकसित कर मेहनत करें, तभी इन योजनाओं में सफलता मिलेगी।

डीएम ने कहा कि जो भी उर्वरक बागबानी के लिए दिए जाएं उसकी तिथि निर्धारित हो। योजनाओं का लाभार्थी को शत प्रतिशत लाभ दिया जाए। डीएम ने बताया कि किसानों को दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाना है। इसमें पहला प्रशिक्षण गनीवां फार्म में दिया जाएगा। उन्होंने दूसरे प्रशिक्षण के लिए मऊ या मानिकपुर के गांव का चयन करने को कहा।

सलाह

- जिला औद्यानिक मिशन योजना समिति की बैठक में डीएम ने दी सलाह
- किसानों के चयन के लिए समिति का गठन किया जाए

योजना के तहत वर्तमान में बीस बीएचपी ट्रैक्टर दिए जाने का प्रावधान है। अब इनकी जगह दूसरे ट्रैक्टर देने का अनुरोध पत्र शासन को भेजा जाएगा। डीएम ने उद्यान अधिकारी को निर्देश दिए कि अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों को इस बार हरियाणा में प्रशिक्षण दिलाएं। प्लांट प्रोटेक्शन एक्यूपमेंट योजना के तहत जो भी लाभार्थी इच्छुक हो, वह उद्यान विभाग में आवेदन दे सकता है। डीएम ने

अन्य योजनाओं की भी समीक्षा

जिलाधिकारी ने बुंदेलखंड विकास पैकेज के तहत हॉर्टीकल्चर, पोषक वाटिका, सब्जी पट्टी की स्थापना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की भी समीक्षा की। जिला उद्यान अधिकारी राकेश कुमार को निर्देश दिए कि सरकार से जो भी लक्ष्य प्राप्त हुए हैं, उनको पारदर्शिता और गुणवत्ता के साथ पूरा करें और सही लाभार्थी का चयन करें। ब्लाकों में किसानों के लिए चलाई जा रही योजनाओं का अंकन करने को कहा।

ग्रेडिंग कर किसान इलाहाबाद, कानपुर की मंडियों में भी बिक्री कर सकते हैं। बैठक में सीडीओ मुजाहिदुल अहसन, वरिष्ठ कोषाधिकारी कमलेश कुमार, अग्रणी जिला प्रबंधक अभिनंदन कुमार, अपर मुख्य अधिकारी एसएन तिवारी, जिला पंचायत राज अधिकारी दयाराम कुशवाहा, अधिशासी अधिकारी लालचंद्र सरोज, कार्यक्रम समन्वयक